भारतीय तन्त्र में भ्रष्टाचार

17

डॉ० शिवाली*

असमान वितरण, कुप्रबन्ध और बिचौलियों द्वारा स्वनिर्मित व्यवस्था के साथ–साथ जनबल में अपसंस्कृति और उपभोक्ता संस्कृति ने भ्रष्टाचार को धरातल से शिखर तक पहुंच बनाने का अवसर दिया है। सामान्य रूप से भ्रष्टाचार की अवधारणा के लिये कौटिल्य के अर्थशास्त्र को उद्धषत किया जाता है। जिस प्रकार जीभ पर रखे हुये शब्द, शहद या जहर के संबंध में कोई ये चाहे कि मैं उसका स्वाद नहीं लूं तो यह संभव नहीं हो सकता, क्योंकि जीभ पर रखी हुई चीज की इच्छा न होने पर भी उसका स्वाद आ जाता है। ठीक उसी प्रकार से जो व्यक्ति अर्थ संबंधी कार्यों पर नियुक्त किये जाता हैं उस अर्थ का वह थोड़ा सा भी स्वाद न लके यह संभव नहीं हो सकता है। वह थोड़ा बहुत धन का अपहरण अवश्य ही किया करते हैं। जिस प्रकार से पानी में रहती हुई मछलियां पानी पीती हुई दिखाई नहीं देती हैं उसी प्राकर अर्थ कार्यों पर नियुक्त कर्मचारी अर्थ का अपहरण करते हुये प्रतीत नहीं होते और इसी प्रकार आकाश में उड़ने वाले पक्षियों की गतिविधि को तो जाना जा सकता है किन्तु गुप्त रूप से धन का अपहरण करने वाले कर्मचारियों की गतिविधि का ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत कठिन कार्य है। इस प्रकार सिद्ध है कि किसी भी सुशासित व्यवस्था में उसका अतिक्रमण करने वाली समानान्तर व्यवस्था निहित रहती है। संचार माध्यमों की अति सक्रियता से भ्रष्टाचार के प्रकट होने से उसका संज्ञान लिये जाने से इस तथ्य की पुष्टि कठिन है कि सत्ता ने उन्हें भ्रष्ट किया है अथवा सत्ताधरियों ने व्यवस्था एवं तन्त्र को भ्रष्ट किया है।

चिन्तन की अपभ्रष्टता के साथ आई पथभ्रष्टता ने भी भ्रष्टचार के बढ़ने के साथ उसे सही सिद्ध करने के लिये तर्क भी प्रस्तुत किये जिन्हें आचार्य कौटिल्य के चिन्तन के बढ़ाव के रूप में देखा जा सकता है। पूर्व चिन्तन परम्परा में सही और गलत में संघर्ष, गलत और कम गलत में संघर्ष जो आज सही और सही एवं गलत और गलत के संघर्ष में होता दिखाई दे रहा है। ऐसे तर्क प्रस्तुत किये जाते हैं कि आज वो भ्रष्टाचारी नहीं हैं जिसे भ्रष्टाचार का अवसर प्राप्त नहीं है अर्थात वही ईमानदार हैं जिन्हें भ्रष्टाचारी होने का अवसर नही है। मान लिया गया कि घूस के रूप में भ्रष्टाचार कार्य कुशलता बढ़ाता है और यह भारी भरकम विधि–विधानों एवं विलम्बकारी विधि व्यवस्था से छुटकारा पाने का साधन है। इस प्रकार के चिन्तन के घर करने से संस्कार एवं आचरण के साथ हमारे सरोकार भी प्रभावित हुए हैं जिनसे मानदण्डों का बदलना अथवा दोहरे मानदण्डों को अपनाने की प्रवषत्ति बढ़ी है। विकास की चिन्ता इसीलिये है क्योंकि गुणवत्ता से रहित विकास करने पर ही भ्रष्टाचार करने का अवसर सहज एवं सुलभ रहता है। गुणवत्ता रहित न्यूनतम विकास की आड़ में अधिकतम भ्रष्टाचार को फलने फूलने का अवसर मिला भ्रष्टाचारी सह कहते पाये गये कि सभी भ्रष्ट हैं। इस व्यवहार को बल मिला कि भ्रष्ट वही है जो पकड़ा गया, शेष पकड़ से परे भ्रष्टाचारी नहीं हो सकते। भ्रष्टाचार के आरोपी

*एसो० प्रो०, राजनीतिक विज्ञान, आई०एन०पी०जी० कॉलिज,मेरठ

भी भ्रष्टाचारी नहीं है जब तक आरोप न्यायालय में सिद्ध न हो। ऐसे जुमले भी चलन में आये कि बड़ी रिश्वत लो और छोटी देकर छूट जाओ। धनपति भ्रष्टाचारियों की सत्ता सामाजिक स्तरीकरण में सर्वोपरि हो गई है। सिद्ध करके देखिये कि आधारभूत संरचना के विकास में निविदाओं की स्वीकषति के बाद गुणवत्ता की कीमत पर मध्यस्थों एवं बिचौलियों द्वारा खजाने में से निकासी से भुगतान तक की प्रक्रिया शीर्ष सत्ता में बैठे राजनेताओं को यह कहने के लिए विवश करती है कि प्रत्येक सौ रूपये में से पन्द्रह रूपये ही विकास कार्य में लगते हैं शेष बचे हुए 85 रूपये को भ्रष्टाचारियों द्वारा हड़प लिया जाता है। विकास और भ्रष्टाचार का यह कोकस व्यवस्था में निहित हो गया है। ऐसे भ्रष्टाचारी बष्ह्मदारष्ण्क उपनिषद में धन से अमर होने की कथा में विश्वास रखते हैं। तुरत फुरत धनी बनने की आकाक्षां के साथ निजी सम्पत्ति को अधि ाकतम स्तर तक पहुंचाने की भावना ने भ्रष्ट तन्त्र को पनपने का अवसर दिया है। समाज का यह हिस्सा अपने साध्यों की चिन्ता करता है भले ही साधन कैसे ही क्यों न हों। अर्मत्य सेन ने स्वातन्त्रय के संवर्धन के परिप्रेक्ष्य में परोक्ष रूप से चिन्तन कर समाधान प्रस्तुत किया है। आर्थिक विकास का उददेश्य भागीदारी की स्वतन्त्रता एवं स्वातन्त्रय संवर्धन हैं शार्टकट द्वारा धनी बनने की आकांक्षायें इसीलिये बलवती हैं क्योंकि हमारी स्वतन्त्रता विहीनतायें समाप्त नहीं हुई है। आय वंचना, कृत्यकारिताओं का प्रतिफल है।

भ्रष्टाचारियों ने भ्रष्ट शब्दावली भी प्रचलित की है– सुविधा शुल्क, हम पानी, नजराना, ईनाम, शुकराना और दक्षिणा, एन0 विठठल ने करप्शन इन इंडिया में स्पष्ट किया है कि भ्रष्टाचार को जीवन में तथ्य के रूप में स्वीकार करना राष्ट्रविरोधी है जो देश के आर्थिक विकास में भी बाधा है। सत्ता ने बहुत कम संख्या में लोगों को भ्रष्ट किया है जबकि मानसिकता, सोच ने मानव की दुर्बलता के रूप में अनेकों को भ्रष्ट किया है। भ्रष्टाचार कम जोखिम में अधिकतम लाभ की प्राप्ति का साधन है। इसके निदान के लिये नियन्त्रण के विभिन्न उपायों, जवाबदेही, प्रतिरोध एवं प्रतिकार करना ही होगा। एन0 विठठल ने ईमानदार और गैर ईमानदारों में अंतर करने की दृष्टि के नजरिये को महत्वपूर्ण मानते हुए एक आख्यान का उल्लेख किया है। नारद ने युधिष्ठिर और दुर्योधन ने कहा कि विश्व में कौन ईमानदार है और दुर्योधन ने अपने प्रत्युत्तर में कहा कि कोई भी ईमानदार नहीं है। सिद्ध करने की आवश्सकता नहीं कि जो स्वयं इद्यमानदार नहीं हैं उसे सभी बेईमान दिखाई देते हैं अथवा जो ईमानदार हैं उसे अपनी तरह सभी ईमानदार प्रतीत होते हैं। यह कहना उचित नहीं है कि सभी भ्रष्ट हैं अर्थात सब कुछ हमारे देखने के दृष्टिकोण से निश्चित होता है। सम्भवतः इसी कारण शोध में बायफोकल दृष्टि महत्वपूर्ण होती है। भ्रष्टाचार के नये रास्ते सुझाने वाले चन्द भ्रष्टाचारी व्यवस्था को आकण्ठ भ्रष्टाचार युक्त कहते हैं, इस दृष्टान्त को दृष्टिगत रखते हुये कहते हैं कि एक मछली पूरे तालाब को गंदा कर देती है।

भ्रष्टाचार की जड़े तलाशने का कार्य भी अत्यंत गहराई से हुआ है। इस पड़ताल में अन्तर्विरोध दिखाई देता है कि जन पर भ्रष्टाचार पर वार करने और भ्रष्टाचारियों को अलग अलग करने का दायित्व है वे स्वयं भ्रष्ट होकर भ्रष्टाचार को प्रश्रय देने वाले ही सिद्ध हुए हैं। जो व्यक्ति भ्रष्टाचार पर सिर्फ भाषण देते हैं वे सर्वाधिक भ्रष्ट व्यक्ति हैं क्योंकि चर्चा मात्र से

पूरा मण्डल प्रदूषित होता है। चर्चा करने से कुछ न करने का सन्देश सम्प्रसारित होता है। रार्बट किलर गार्ड को भ्रष्टाचार के विषय में उद्धष्त किया जा सकता है–

भ्रष्टाचार की गतिदायकता को उपरोक्त न्यमैरिकल में अवलोकन किया जा सकता है। भ्रष्टाचार ताकतवरों द्वारा अशक्तों का भ्रष्ट प्रकार्यों से किया जाने वाला शोषण है। भ्रष्टाचार के साइकिल से ही भ्रष्ट व्यवस्था के पहियों को गति मिलती है। एकाधिकार एवं विवेकाधिकार की शक्ति से युक्त भ्रष्टाचारी जवाबदेही की चिन्ता न करते हुये व्यवस्था को ही भ्रष्ट बना देते हैं।

भारत में इंसपैक्टर एवं लाइसेंसी राज से अनुमोदन पाने के लिये भ्रष्ट साधनों को अपनाना आवश्यक है। विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों को हथियार बेचने हेतु कमीश्ज्ञन और रिश्वत की अनुमति भी भ्रष्टाचार का मुख्य स्रोत्र है। विकासशील देशों को ऋण इसी भ्रष्टाचार के कारण है। लोकसेवकों की सोच और व्यवस्था के कार्य करने की पद्धद्यतियां इन परिस्थितियों में भ्रष्ट ही होगीं। सदशसन हेतु आचरण में शुचिता अनिवार्य है जिसका स्थान भ्रष्ट आचरण ने ले लिया है। उपर से सदआचरण से युक्त और भीतर से नितान्त भ्रष्टाचारी यह सिद्ध करते हैं कि हाथी के दांत खाने के और, दिखाने के और हैं। भ्रष्टाचार से कमाया गया धन सत्ता में लगाकर धन से धन कमाने का स्वतः चलने वाना भ्रष्टाचार का चक्रीय क्रम है। उंची कर दरें भी कर चोरों द्वारा भ्रष्टाचार को ही बढ़ाती है। राजनीतिज्ञ, उद्योगपति और नौकरशाहों के मध्य भारत में संस्थागत भ्रष्टाचार सामने आया है। पद के दुरूप्रयोग से लेकर सरकारी मशीनरी के दुरूप्रयोग तक भ्रष्टाचार व्याप्त है। भ्रष्टाचारी भ्रष्टाचार निरोधक कड़े कानून की काट ढूढ़ने में भी दक्ष है। यह कहना कठिन है कि शीर्षस्था सत्ताधारियों ने नौकरशाही को भ्रष्टाचार के नये रास्ते दिखाये है। अथवा नौकरशाही ने सत्ताधरियों को भ्रष्ट किया है। एक भ्रष्ट को बचाने के लिये सभी भ्रष्ट कितना सघन प्रयार करते हैं जिसके अनेक उदाहरध है। ऐसा ढ़ांचा बन गया है कि ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे कानून इसके जिए बनाये ही नहीं गये हैं। माफियाओं ने भी अकूत धन कमाकर उसी धन में से पर्याप्त हिस्सा उपर तक पहुंचा कर भ्रष्टाचार को बहुआयामी बनाया है। नई पीढ़ी भी भ्रष्ट वातावरण से भ्रष्ट स्वभाव और मानसिकता से युक्त हो रही है। इस प्रकार भ्रष्टाचार हमारी कार्य संस्कृति का महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य हिस्सा है। भ्रष्टाचार का प्रभाव हमारे आधारभूत ढांचे की गुणवत्ता पर भी पड़ रहा है। देश की जनता से कर के रूप में वसूले जाने वाले राजस्व में से अधिकतम हिस्सा भ्रष्टाचार की भेट चढ़ जाता है जिसकी क्षतिपूर्ति हेतु जनता पर अतिरिक्त करों का भार लादा जाता है। हमारे समाज में भ्रष्टाचार की अति ने सामाजिक विघटन को बढ़ावा दिया है। व्यवहार प्रतिमान विसंगति से युक्त हैं। इस कारण नैतिक मानदण्डों का पतन होने से भ्रष्टाचार एक सामाजिक अपराध के रूप में भी सामने आया है।

समुचित सामाजिकरण न होने से भी भ्रष्टाचार में वृद्धि हुई है। हमारे स्वार्थों के साथ–साथ दूसरों के प्रति संवेदनशीलता का अभाव भी महत्वपूर्ण कारक है। कल जिनके पास कुछ नहीं था आज वे भ्रष्टाचारी होने पर भी सफलता के उदाहरण बने हुए हैं। भ्रष्टाचार को

आर्थिक अपराध से जोड़कर देखना होगा जिसमें अवैध खनन से लेकर अवैध उत्पादन तक निहीत है। एक समानान्तर अर्थव्यवस्था के रूप में काले धन की अर्थव्यवस्था ने भारत के विकास की आर्थिकी को प्रभावित किया है। आज भ्रष्टाचार सुशासन को कुशासन में और व्यवस्था को कुव्यवस्था में परिवर्तित कर रहा है। हवाला काण्ड से लेकर 2 जी स्पैक्ट्रम तक मनरेगा में परिवर्तित कर रहा है। हवाला काण्ड से लेकर 2 जी स्पैक्ट्रम तक मनरेगा से लेकर एन0एच0आर0एम0 तक भ्रष्टाचार के उदाहरण जितनी शीघ्रता से उजागर हुए उतनी ही शीघ्रजता से इनका पटाक्षेप भी हो गया। अतः प्रभावी कार्यवाही का न होना भी एक प्रकार का भ्रष्टाचार है। भारतीय दंड विधान की धारा 161 में पारिभाषित भ्रष्टाचारी आज भ्रष्टाचारी नहीं रह गया है। काले धन के अधिक बढ़ने से मनुष्य व्यभिचारी भी हुआ है। वास्तवक नियन्त्रण के साधन भी प्रभावी नहीं रहे हैं। राष्ट्रीय चरित्र के अभाव एवं उसकी संकुचित स्वार्थप्रता ने समाज को भ्रष्ट बनाया है और राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले भी इसी भ्रष्ट समाज के निर्वाचित प्रतिनिधि है। अतः भ्रष्ट समाज राष्ट्र एवं राष्ट्र का नेतृत्व करने वालों को भ्रष्टाचारी बनाता है। भ्रष्टाचार का एक वैश्विक स्वरूप भी है जिसकी चरितार्थता विश्व पटल पर दिखाई देती है। जनमानस जब भ्रष्टाचार का रूप ले लेता है। अक्षम नेतृत्व की भ्रष्ट नीति एवं प्रदत्त संरक्षण से भ्रष्ट तत्वों का दुस्साहस बढ़ता है, जिससे राष्ट्र की साख प्रभावित होती है और देश भ्रष्टतम देशों की सूची में निचले स्थान पर हो जाता है।

आय से अधिक सम्पत्ति वाले प्रकरणों की बढ़ती संख्या अपने आप में अन्तः साक्ष्य है बढ़ते भ्रष्टाचार का। व्यवस्था में भ्रष्टाचारियों के मध्य पाई जाने वाली पारस्परिकता एवं संरक्षण उक्त तथ्य की पुष्टि करता है। स्टिंग आपरेशन एवं मीडिया की अति सक्रियता ने सप्रमाण भ्रष्टाचार को उजागर किया है। व्यवस्था में एक श्रंख्ला की तरह भ्रष्टाचार स्वयं कार्य करता है–उपर से नीचे की ओर अथवा नीचे से उपर की ओर। हमारे देश में गठबंधन के ध र्म के निर्वहन के लिये भी सत्ता में सहभागितगा करने वालों के भ्रष्टाचार की अनदेखी की जाती है। अतः सत्ता के भीतर से ही भ्रष्टाचार पनपता है और उसी सत्ता को खोखला भी करता है। ककहीं कोई सुनवाई नहीं है। कार्यवाही न होना एवं प्रकरणों को लबिंत रखना इस कानून का अन्तः साक्ष्य है कि न्याय मं देरी होने का अर्थ है न्याय न होना। ऐसे में सदशासन की आशा करना व्यर्थ है। धनलिप्सा की पृष्ठभूमि में ही भ्रष्टाचार पनपता है। यही कारण है कि इस लिप्सा के बढ़ने से काला धन स्विस बैंक में जमा कराने की प्रवषत्ति बढ़ी है। अतः भ्रष्टाचार मिथ्र्याचार और व्यभिचार का रूपक होने के कारण सुशासन में बाधक है। हम यह स्वीकार करने को बाध्य है कि भ्रष्टाचार सम्पूर्ण ताने–बाने में प्रवेश्ज्ञ कर गया है, जिसमें पद स्थिति के दुरूप्रयोग के साथ संसाधनों का दुरूप्रयोग भी बढ़ा है। दोहन की इस प्रवषति ने उन व्यक्तियों को भी भ्रष्टाचार की ओर उन्तख्रु कर दिया है जो सदशासन ने वास्तविक हामी हैं। इस प्रकार भ्रष्टज्ञचार मिथकीय उल्लेखों से आरम्भ होकर एक उद्योग के रूप में विकसित हो गया है। सातर्कता आयोग से लेकर भ्रष्टाचार निरोधक कानून तक कार्यवाही को तेजी से आरम्भ कर ठंडे बस्ते में डाल देते हैं। सम्पत्ति को सार्वजनिक करने के लिये जितने नियम बनाये जाते हैं उतनी ही सम्पत्ति छिपाई जाती है।

किसी भी व्यवस्था या तन्त्र में भ्रष्टाचार व्यवस्था में निहित नहीं होता अपितु उसके निराकरण, प्रतिकार, प्रतिरोध औश्रर निवारण के कारक भी उसी व्यवस्था में निहित रहते हैं। अतः भ्रष्टाचार की अन्तः साक्ष्यों के परिप्रेक्ष्य में जांच और पड़ताल की जानी आवश्यक है। व्यवस्था में पक्ष और विपक्ष में चलने वाला संघर्ष संघर्ष ऐसा ही है जैसा कि माफियाओं के मध य चलने वाला संघर्ष, यह संघर्ष भ्रश्टाचारियों के मध्य होकर भ्रष्टाचार का निराकरण करता है। भ्रष्टसाधनों से अर्जित धन जब सत्ता ताने के लिए लगाया जायेगा तब सत्ता का भ्रष्ट होना स्वाभाविक है। भारत के परिप्रेक्ष्य में निरक्षरों, वंचितों, उपेक्षितों और गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या में निर्धन्ता के दुष्चक्र और शोषण की व्यवस्था ने भ्रष्टाचार को रोकने के लिये कैसे प्रभावी निगरानी कर सकता है। समचना के अअधिकार के वास्तविक प्रयोग की क्षमता के प्रयोग की स्थिति से भी ऐसा जनगल स्व्यं को असमर्थ पाता है। रोटी–रोजी की लड़ाई में दिन रात एक करने वालों को सूचना के अधिकार के विषय में पूछताछ का समय ही नहीं है। वस्तुतः भारत के विकास का दायित्व भी उन्हीं के पास है जो विकास के माध्यम से भ्रष्ट तन्त्र के पक्षधर है। एक व्यक्ति एक वोट से अने राजनीतिक समाज ने जिसे भी सत्ता दी वह पूर्ववर्ती सत्ता से अपदस्थ हुई समानान्तर भ्रष्ट सत्ता के विकल्प बन गया। बाहस साच्य उतने प्रभावी नहीं हो सकते जितन ी अन्तः साक्ष्य। उदाहरण है हर पांच वर्या बाद चुप्पी साध ो जनबल का मतदाता के रूप में भ्रष्ट विकास के माडन को खारिज कर सतही रूप से भ्रष्ट के आदर्श को निर्वाचित करना भले ह ीवह भ्रष्ट विकास का उदाहरण क्यों न बने। इस विषय में भ्रष्टाचार की अनवरत श्रृंखला चलती रहती है। सत्ता में बैठे हुये इस बात का दिखावा करते हैं कि निर्णय एवं निर्माझा की प्रक्रिया में हम जनगल को वास्तविक सहभागिता एवं हिस्सेदारी दे रहे हैं। इस प्रकार व्यवस्था के भीतर से निकली हुई एक आवश्यकता के रूप में आम आदमी द्वारा की जाने वाली निगरानी ही इस समस्या का स्थायी निदान है। यह निदान एक एक जन को एक एक वोट में बदल कर निर्वाचन की प्रक्रिया द्वारा भ्रष्टाचार को खारिज करेगा। इस भय से उत्पन्न हुआ सत्ता के जाने का भय अन्तः प्रतिरोध सिद्ध होगा। अन्ना का जन लोकपाल, सिटीजन चार्टर तभी प्रभावी होगें